आंखों में सूरज

सुधा ओम ढींगरा

सं०- हिन्दी चेतना (अन्तर्राष्ट्रीय त्रैमासिक पत्रिका) भारत एवं अंतरजाल (इन्टरनेट पत्रिकाओं में) की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में कहानियाँ, कविताएँ, इंटरव्यू व लेख निरन्तर प्रकाशित होते रहते हैं।
प्रकाशित कृतियाँ : कहानी संग्रह- कौन सी ज़मीन अपनी, वसूली। कविता संग्रह : धूप से रूठी चाँदनी, सफ़र यादों का।
संपादन : मेरा दावा है (काव्य संग्रह-अमेरिका के कवियों का संपादन)
अन्य संग्रह: 15 प्रवासी संग्रहों में कविताएँ, कहानियाँ प्रकाशित।
सम्मान : कहानी संग्रह कौन सी ज़मीन अपनी 2012 अम्बिका प्रसाद दिव्य पुरस्कार से सम्मानित। पत्रिका कथाबिम्ब में प्रकाशित कहानी फन्दा क्यों...? पाठकों के अभिमतों के आधार पर वर्ष 2010 की श्रेष्ठ कहानी और कमलेश्वर स्मृति कथा पुरस्कार द्वारा पुरस्कृत।

पति की नौकरी ही ऐसी थी कि देश-देश, शहर-शहर घूमते हुए अंत में, हम भूमण्डल के एक बड़े टुकड़े के छोटे से हिस्से में आ गए। बच्चे बड़े हो रहे हैं और इस शहर को अंतिम पड़ाव बनाने का हमारा निवेदन कंपनी ने स्वीकार कर लिया। शहर छोटा जरूर है, पर बड़े शहरों जैसी हर सुविधा यहां उपलब्ध है। बच्चों के पालन-पोषण के लिए यह स्थान उत्तम और सुरक्षित माना जाता है। भारतीय समुदाय और स्थानीय लोग यहां मिलजुलकर रहते हैं। इसका परिचय मुझे घर में प्रवेश करते ही मिल गया। एक सप्ताह तक पड़ोसियों ने मुझे खाना नहीं बनाने दिया ताकि हम सामान से भरे बॉक्स खोलकर उन्हें सेट कर लें और खाना बनाने से बेफिक्र होकर अपने घर में सहज हो जाएं। सबने तहेदिल से हमारा स्वागत किया। जिस कस्बे में मैं जन्मी और बड़ी हुई, वैसा ही स्नेह, सादगी, अजनबियों को अपना बना लेने का जज्बा, अपने आसपास पाकर मुझे सुखद अनुभूति हुई। लगा, मेरे बच्चे भी वैसे ही माहौल में पलकर बड़े होंगे।

एक माह तक मैं अपने आपको व्यवस्थित करने में लगी रही। घर के निकट कौन से शॉपिंग सेंटर हैं, भारतीय ग्रोसरी स्टोर कहां हैं, बच्चों के स्कूल की बस कितने बजे और कहां आकर रुकती है, बस यही जानकारियां लेने में उलझी रही। पड़ोस की गतिविधियों में हिस्सा नहीं ले पाई। कार में आते-जाते आस-पास वालों से हाय... बाय जरूर हुई।

पड़ोस से मैं बच्चों के पहले दिन स्कूल जाने के साथ ही जुड़ी। स्कूल बस हमारे घर के कोने पर आकर रुकी। सारे अड़ोस-पड़ोस के बच्चे और उनके मां-बाप पहले से ही आकर वहां खड़े हो गए। बच्चों को बस में चढ़ाकर व्यावसायिक मां-बाप चले गए। घरेलु महिलाएं वहीं से इकट्ठी होकर सैर को निकल पड़ीं। सबसे पहले उन्होंने मिसिज हाइडी को हैलो कर कहा, "वि विल ड्रिंक कॉफी विद यू, मिसिज हाइडी!" ये बुजुर्ग महिला, ठीक मेरे घर के सामने अपने बरामदे में बैठी, बच्चों को स्कूल जाते देख रही थीं। मैंने एक बात नोटिस की, सारे बच्चों ने अपने मां-बाप को 'बाय' कहने के बाद, मिसिज हाइडी को भी, "बाय ग्रैंड मां! सी यू ऑफ्टर स्कूल," कहकर उन्हें फ्लाइंग किस दी थी। मिसिज हाइडी भी उन्हें फ्लाइंग

किस देते हुए मुस्कुरा रही थीं।

सुकन्या, हमारे साथ वाले घर की पड़ोसन ने मुझे बताया, ''पारूल! मिसिज हाइडी हमारे सब-डिवीजन में सबसे पुरानी हैं। पांच साल पहले मिस्टर हाइडी की डेथ हो गई और मिसिज हाइडी अकेली रह गईं।''

''क्या इनके बच्चे नहीं?'' मैंने पूछा।

''हैं... दो बेटे, पर नाम के। मिस्टर हाइडी की डेथ पर आए थे। उसके बाद आज तक कभी पूछा नहीं- मां, तुम कैसी हो? मिसिज हाइडी ही पोते-पोतियों, बेटे-बहुओं को उपहार भेजती रहती हैं। उनकी तरफ से तो कभी यह भी उत्तर नहीं आया कि मां उपहार मिल गए या मां तुम इतना खर्च क्यों करती हो।''

''ओह! मिसिज हाइडी की आंखों का खालीपन मैंने पहले दिन देखा था।'' मेरे मुंह से अचानक निकल गया। ''हम सब इनका बहुत ख्याल रखते हैं। सुबह की कॉफी हाइडी आंटी के साथ इसीलिए पी जाती है कि उनकी सुबह रौनक से शुरू हो और फिर जो भी कोई स्पेशल डिश कुक करता है, वह आंटी को जरूर दी जाती है।''

शाम को बच्चे स्कूल से लौटकर आए तो बस से निकलते ही ''ग्रैंड मां'' कहते हुए हाइडी आंटी की तरफ भागे। उन्होंने सबको अपने हाथों से बनाई कुकीज खाने को दीं। कुकीज थामे बच्चे उछलते-कूदते अपने मां-बाप के साथ घरों को चले गए। हाइडी आंटी की आंखों और होंठों पर मुस्कुराहट उदासी की चादर ओढ़े रही, जब तक बच्चे आंखों से ओझिल नहीं हो गए। उसके बाद जिस तरह उठकर वे घर के अंदर गईं, लगा अकेलेपन का बोझा उनसे ढोया नहीं जा रहा। अपनी रसोई की खिड़की से मैं उन्हें देख सकती हूं। कुकीज खाते हुए मेरे बच्चे चहके, ''ऑसम कुकीज! मॉम, शी लुक्स लाइक अवर नानी।''

बच्चे ने सही कहा, मेरी मां तो हाइडी आंटी से भी अधिक अकेली हैं। मैं पांच वर्ष की थी और मंझला भाई दस का तथा बड़ा भाई पन्द्रह का, जब बाबूजी हमें छोड़कर चले गए। बैठे-बैठे ही लुढ़क गए थे और मां वर्षों इस सच को स्वीकार नहीं कर पाई थीं। मां अपने मां-बाप की इकलौती संतान थीं। बाबूजी के बाद नाना-नानी हमें अपने घर ले आए। मेरी शादी के कुछ वर्षों बाद तक मां को नाना-नानी का सुख मिलता रहा। उनके बाद मां ने अपने जीवन में आए शून्य को कभी बड़े भाई के बच्चे पालने में और कभी छोटे भाई के बच्चों की देखभाल से भर लिया। उन वर्षों में मैं जब भी मां से मिलने गई, निराश लौटी। मां के पास मेरे लिए समय ही नहीं होता था, पर सुकून था- मां व्यस्त हैं.. वर्षों मां को अपने जीवन के खालीपन का एहसास नहीं हुआ। अगर हुआ भी तो उसे भरने के कई विकल्प मां के पास थे।

गत कई वर्षों से मैंने मां में एक परिवर्तन देखा है। मां की चमकती आंखें और मुस्कुराते होंठ बुझ से गए हैं। मां का दोमंजिला पैतृक घर है, जिसके निचले हिस्से में मेरा बड़ा भाई और ऊपरी मंजिल पर छोटा भाई रहता है। मां छह महीने बड़े भाई और छह महीने छोटे भाई के पास रहती हैं। भाई-भाभियां सुबह अपने-अपने काम पर चले जाते हैं और बच्चे स्कूल-कॉलेज। मां अकेली रह जाती हैं। शाम को घर आते ही सब अपने में व्यस्त हो जाते हैं। मां के भीतर और बाहर शून्य बढ़ने लगा है। घर के कामों में मां सहायता करना चाहती हैं, तो वह भाभियों को अपनी गृहस्थी में दखल लगता है। मैं कई बार मां को समझा चुकी हूं, ''मां! यह शायद आपका भ्रम है, जब भाभियों के बच्चे आप पाल रहे थे और पूरा घर आपके हवाले था, तब दखल नहीं था।'' मां बस रो देती हैं और कहती हैं, ''तुम नहीं समझोगी। इतनी बेवकूफ लगती हूं, जो भ्रम और सच का अंतर न जान सकूं।'' बेवजह और फिजूल बातों पर जब दोनों भाइयों के परिवार झगड़ते हैं तो मां के लिए कोई स्थान नहीं रह जाता। हाइडी आंटी के सिर पर कम से कम छत तो अपनी है, मां के पास तो वह भी नहीं। मां टूट गई है। बिखर गई है। अकेलेपन का दर्द और उदासी अब चेहरे और बदन से झलकने लगी है। कैसे बताऊं मां को कि मैं एक औरत की

तरह उन्हें महसूस करने लगी हूं। भीतरी भावों को समझती हूं। मां बाबूजी को जिस तरह याद करती हैं, महसूस किया जा सकता है कि मां अपनी वेदना बाबूजी के साथ बांटना चाहती हैं। मां को कोई साथी चाहिए। बुढ़ापे का सहारा चाहिए। मां सिर्फ मां नहीं, औरत है, इंसान है। उसे भी जीने का हक है। मां की जगह अगर बाबूजी होते तो सबसे पहले उनकी शादी की जाती और फिर परिवार तथा समाज के लोग बड़ी सफाई से कहते, ''क्या करे बेचारा पुरुष! बच्चे कैसे पाले? जाने वाली चली गई अब पहाड़ जैसी जिंदगी यह अकेले कैसे काटे? जीवन जीने के लिए साथी तो चाहिए।'' और... औरत की जिन्दगी पहाड़ जैसी नहीं होती, उसे किसी का साथ नहीं चाहिए? परिवार और समाज की इस दोहरी मानसिकता से मैं चिढ़ती हूं। रोष से भर जाती हूं। लपक-लपककर बाहर आने वाले भावों को अंदर ही गटक जाती हूं। जुबान खुल गई तो अनर्थ हो जाएगा। मुझे तो कोई कुछ कह नहीं पाएगा। यह कहकर नकार देंगे, विदेश से आई है, इसलिए ऐसी बातें करती है, पर मां का वहां रहना दूभर हो जाएगा। मां की घुटन मुझे दिखाई देती है, मां की पीड़ा मेरे बदन में होती है। भीतर का खालीपन अब उनकी आंखों में उतरने लगा है।

मां को अपने साथ यहां लाने की मैंने बहुत जिद की थी, पर मां नहीं मानी। अपने संस्कारों में बंधी वे बेटी के घर में कैसे आकर रहें? मां के दर्द को मैं दूर बैठी भी महसूस कर रही हूं, पर कुछ कर नहीं सकती। हाइडी आंटी से रोज मिल लेती हूं, ऐसा लगता है मां से मिल ली। शाम को रसोई में बर्तन साफ करते हुए खिड़की से बाहर नजर पड़ी। हाइडी आंटी के घर के आगे एक कार आकर रुकी और एक बुजुर्ग फूलों का गुच्छा हाथ में लिए कार से निकले और उनके घर की डोर-बेल बजाने लगे। मैं वहीं खड़ी देखती रही। आंटी ने मुस्कुराते हुए दरवाजा खोला। आंटी खूब सजी-धजी थीं। मैंने सोचा कोई पहचान वाला होगा और अपने कामों में लग गई।

तकरीबन रोज ही वह कार मैं आंटी के घर के आगे देखने लगी। आंटी के शरीर की स्फूर्ति स्पष्ट दिखाई देने लगी और चेहरे पर आई चमक दमकने लगी। हममें से किसी ने इस बारे कोई बात नहीं की। आंटी के साथ वही दिनचर्या रही। रोज की तरह बच्चों को स्कूल बस में चढ़ाकर, हम सब पड़ोसनें सैर को जाने लगीं तो गैब्रियल ने हमें आंटी और जॉर्ज की शादी का निमंत्रण दिया। तभी सारी कहानी पता चली।

हाइडी आंटी और जॉर्ज चर्च में मिले थे। जार्ज भी विधुर हैं और उनका कोई बच्चा नहीं। दोनों के हमसफर इस उम्र में उनका साथ छोड़ गए। अकेले, भीतर शून्य से भरे, दर्द ही दोनों का साझा है। चर्च के सब मित्रों ने उन्हें सलाह दी कि बाकी बची जिन्दगी एक-दूसरे का सहारा बनकर, एक-दूसरे का दु:ख-सुख बांटते हुए बिता लें। आंटी और जॉर्ज को भी महसूस हुआ कि इस उम्र में कोई बातें सुनने-सुनाने वाला, साथ हंसने-रोने वाला मित्र चाहिए। ढलती उम्र में शिथिल होती इन्द्रियां और पल-पल परिवर्तित होती मन:स्थिति में सखा भाव परोक्ष और अपरोक्ष रूप से संबंधों में छाया रहता है। इसी सखा भाव के लिए उन्होंने शादी का फैसला कर लिया। हमारे बच्चों को निशेध रूप से बुलाया गया। सैर करते हुए सुकन्या ने एक रहस्योद्घाटन किया। जॉर्ज और हाइडी आंटी ने अपनी विल भी कर दी कि उनकी मृत्यु के बाद उनके घरों पर हाइडी के बच्चों का कोई अधिकार नहीं होगा और उनके घर चर्च को दिए जाएं। घरों से मिलने वाले पैसे से गरीब बच्चों को पढ़ाया जाए।

चर्च के उनके दोस्तों और हम सब पड़ोसियों ने मिल-जुलकर उनकी सादा-सी शादी कर दी। आंटी के बच्चे उनकी शादी में नहीं आए। हमारे बच्चे उन्हें घेरे खड़े रहे और हाइडी ग्रैंड मां और जॉर्ज ग्रैंड पा ने बच्चों को साथ लेकर शादी करवाई। मैं वहां खड़ी नहीं रह सकी। बाहर लॉन में आ गई।

हाइडी आंटी की जगह मुझे मां नजर आ रही थी...।

❁❁❁